को अच्छी फिल्में बना कर दे सकेंगे, सुन्दर और स्वस्थ फिल्में दे सकेंगे।

18.14. hrs.

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

Seventeenth Report

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND COMMUNICATIONS (DR. RAM SUBHAG SINGH): I beg to present the Seventeenth Report of the Business Advisory Committee.

श्री इसहाक साम्भली (अमरोहा) : उपाध्यक्ष महोदय, वहां यह तय किया गया था कि पूरा दिन दिया जायेगा।

MR. DEPUTY-SPEAKER: When it would be circulated, it will come before the House tomorrow.

श्री इसहाक साम्भली : मैं करेक्ट कर रहा हूं। वहां यह तय हुआ था कि आफ्टर क्वेश्चन -- अवर, फुल डे डिस्कशन होगा।

DEMANDS FOR GRANTS, 1968-69—*Contd.*

Ministry of Information and Broadcasting—*Contd.*

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) : उपाध्यक्ष महोदय, भारत में स्वतन्त्रता के बाद जब केन्द्रीय मंत्रि-परिषद् के विभागों का वितरण हुआ तब आकाशवाणी या रेडियो का यह विभाग सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वयं अपने हाथों में रक्खा। इस से इस बात का परिचय मिलता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल और उस समय की सरकार इस विभाग को कितना महत्वपूर्ण विभाग मानती थी। लेकिन दुर्भाग्य से ज्यों-ज्यों समय बढ़ता गया, सरदार के बाद जिन के हाथों में यह विभाग रहा उन में से कुछ को छोड़ कर शेष ने इस विभाग को जितनी गम्भीरता से लिया जाना चाहिये था और जो सतर्कता इस विभाग के साथ बरती जानी चाहिये थी उस प्रकार की सतर्कता नहीं बरती। उदाहरण के तौर पर मैं कुछ बातें विशेष रूप से कहना चाहता हूं।

आकाशवाणी जो प्रचार का सब से प्रमुख माध्यम देश में बना हुआ है, उस में दो प्रकार के व्यक्तियों की भरमार है। एक वह जो साम्यवादी विचारों से प्रभावित हैं। और दूसरे वह जो सम्प्रदायवादी विचारों से प्रभावित हैं। आकाशवाणी से कुछ कार्यक्रम प्रति दिन प्रसारित हैं। लेकिन उन कार्यक्रमों के प्रसारण के लिये जिन व्यक्तियों का उपयोग होता है उन की अपनी विचारधारायें और जिन समाचार-पत्रों और संगठनों में वे कार्य करते हैं। लेकिन इतना होने के बावजूद भी आकाशवाणी के कर्मचारी और यह मंत्रालय उन का उपयोग करते हैं। देश में जिस विचारधारा को वे अपने माध्यम से प्रसारित करते हैं, उस विचारधारा को आज देश में सभी व्यक्ति जानते हैं कि उस के पीछे कौन सा पुट है। जैसे स्पाटलाइट है और इसी प्रकार जो दूसरा आज का प्रसंग है उन में कौन कौन व्यक्ति हैं जो कि उन के लेखक और प्रचारक हैं? मैं चाहूंगा कि सूचना और प्रसारण मन्त्रालय उस की तह में बैठ कर इस बात की जानकारी लें।

इसी तरह से वहां पर एक सम्प्रदायवादी लोगों का गुट भी बन गया है। अभी कुछ दिन पहले शेख अब्दुल्ला छूटे। मैं पूरी सरकार की इस ना समझी की ओर अभी नहीं जाना चाहता। लेकिन मैं आकाशवाणी की चर्चा करना चाहता हूं। उस के छूटने के बाद आकाशवाणी ने जिस तरह से उस को हीरो बना कर देश में पेश किया और जिस तरह से 15-15 मिनट के समाचार बुलेटिनों में पहले 5 या 7 मिनट शेख अब्दुल्ला के सम्बन्ध में दिये, उस से यह प्रतीक होता था कि आकाशवाणी के अन्दर कुछ विशेष प्रकार के व्यक्ति बैठे हुए हैं जो इन परिस्थितियों का लाभ उठा रहे हैं।